महिला उत्थान का एकमात्र समर्थ संस्थान

वैदिक काल से लेकर आज तक के इतिहास पर अगर नज़र डालें तो एक स्पष्ट दर्पण हमारे सामने है कि कोई भी कार्य नारी के बिना होना असंभव था, और आज भी है। लेकिन असमंजस ये है कि इसके लिए पहल कौन करे, इसे सम्पूर्णता कौन दे, तराशे कौन, निखारे कौन? इतना कुछ होने के बावजूद भी अपने अस्तित्व और अपने वजूद के लिए लड़ने का सिलसिला अनवरत जारी है। लेकिन जनमानस द्वारा उसे स्वीकार किया जाना थोड़ा सा मुश्किल लगता है। फिर भी एक

ऐसी शक्ति है जिसने इनकी शक्ति को पहचाना और उनको सम्पूर्णता के साथ आगे बढ़ाया। उसका ज्वलंत और जीवंत उदाहरण हम सबके समक्ष है। इस संघर्ष को, इस स्थिति के कुछ अनछुए पहलुओं को हम आपके सामने रखते हैं...

कहते हैं समाज का विकास तब सही माना जाता है, जब विकास चहुँ मुखी हो। जिसमें आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, बौद्धिक समानता आदि पहलू शामिल हैं। लेकिन क्या आपको लगता है कि इन सारे पहलुओं को सभी साथ लेकर चलते हैं? शायद नहीं। सभी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, लेकिन शिक्षा भी सिर्फ और सिर्फ पैसा कमाने हेतु। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में है शारीरिक विकास, वैज्ञानिक विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास। लेकिन आध्यात्मिक विकास में विवेक शक्ति का विकास, मानवीय सम्बन्धों का विकास, चेतना का विकास आदि शामिल हैं। कहा जाता है कि विद्या वो, जो हमको मुक्त कर दे भय से, मानसिक बंधनों से, चिंता से, अंधविश्वास आदि से। आज इन सभी में हमारा समाज पिस रहा है। ऐसे में जो समाज की एक बहुमूल्य कड़ी है, जिससे हम जन्म लेते हैं, पलते हैं, बड़े होते हैं, उसको तो जैसे लोगों ने दरकिनार ही कर दिया है। पालने से लेकर मृत्युपर्यंत यदि सच में कोई साथी है इस लौकिक दुनिया में तो वो एक नारी ही है। सब साथ छोड़ देते हैं, लेकिन ये शक्ति हमेशा साथ देने को आतुर है। आज भी इसपर विश्वास कर सकते हैं। अब सोचना ये है कि इस कड़ी को शक्तिशाली कैसे बनाया जाए? क्योंकि अगर ये कड़ी शक्तिशाली बन गई, तो दुनिया की हर कड़ी शक्तिशाली हो जायेगी। लेकिन इस कड़ी को शक्तिशाली बनाने वाला शिक्षक इस दुनिया में तो नहीं है। तो अब प्रश्न ये उठता है कि कौन ऐसा है जो इनको उठा सकता है? बहुत सारे समाज सुधारक हुए जिन्होंने इनके लिए आवाज़ उठाई, इनके कुछ मौलिक अधिकार भी दिलाये और आज सरकार भी इनके लिए प्रतिबद्ध है कि ये आगे बढ़ें, अपना अधिकार लें, इन्हें भी समान अधिकार मिले। लेकिन क्या बाहरी अधिकार देने से आपको लगता है कि ये सशक्त बन सकती हैं? समाज में फैली हुई कुरीतियां, अंधविश्वास, इनके प्रति हीन भावनाएं इन्हें और ज़्यादा नीचे ले गई हैं अधिकार मिलने के बाद भी। क्योंकि जो सहज सम्मान होता है, प्राकृतिक रूप से एक-दूसरे को आदर देते हैं, उन्हें एक नया दर्जा दिलाते हैं, वो सिर्फ और सिर्फ एक कहावत बनकर समाज में रह गई है। इसीलिए शायद इनकी मानसिक अवस्था, इन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ना, दुनिया द्वारा घृणित भाव से देखने के नज़रिये को बदलने के लिए एक ऐसा संस्थान सामने आया जिसके संस्थापक स्वयं परमपिता परमात्मा हैं। उन्होंने आकर सबसे पहले इस गिरी हुई मानसिकता से ऊपर उठाने हेतु अपना माध्यम एक अनुभवी मानव तन को बनाया जो शुरू से ही सभी नारियों का सम्मान करता था। लेकिन उनके महत्व को पूरी तरह से परमात्मा ने बताया कि ये साधारण नहीं हैं, ये शक्तियाँ हैं, ये देवियाँ हैं, इन्हीं की पूजा करके लोग अपनी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। फिर शुरू हुआ इनके उत्थान का इतिहास। परमात्मा ने इनको इतना सम्मान दिया, इतनी शक्ति दी कि आज सबके मन की क्यारी को शांति के जल से सींचने व मानव उत्थान और महिला उत्थान के कार्य में ये शिव की संतान और प्रजापिता ब्रह्मा की मुख की रचना ब्रह्माकुमारियाँ जुड़ गईं। यहाँ पर स्वैच्छिक रूप से अपने जीवन को समर्पित करने हेतु मानसिक रूप से परमात्मा स्वतंत्र बनाते, उन्हें भय से मुक्त करने हेतु मौलिक नैतिक धार्मिक आध्यात्मिक शिक्षा देते और सबसे पहले इस चीज़ का ज्ञान देते कि आप महिला या पुरुष नहीं हो, आप नर अथवा नारी नहीं हो, आपने सिर्फ ऐसा तन लिया हुआ है, हो आप एक चैतन्य शक्ति, चैतन्य आत्मा। और आप देखो ये कितनी बड़ी वैज्ञानिकता है कि जब व्यक्ति को ये एहसास दिलाया जाता है या इस भान से निकाला जाता है कि आप माता नहीं हो, आप पिता नहीं हो, आप महिला नहीं हो, आप पुरुष नहीं हो, तब व्यक्ति के अंदर वैसे ही समानता आ जाती है, और समानता ही सबको सम्मान दिलाने का माध्यम बनती है। समाज में अपना स्थान बनाने के लिए पहले इस भान को भूलना पड़ेगा कि मैं स्त्री हूँ या नारी हूँ। मैं चैतन्य शक्ति हूँ। ये तो समाज ने हमारे शारीरिक रचना को देख कर बोला, लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा पूर्णतया इस बात से हम बेफिकर हो जाते हैं कि हम कौन हैं। हम वो सबकुछ कर सकते हैं जो समाज में पुरुष कर सकते हैं। उदाहरण के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान में अठारह हज़ार से भी ज़्यादा बहनें अपने जीवन द्वारा पूरे विश्व को एक नई दिशा प्रदान कर रही हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि भारत तथा विश्व में फैले हुए सेवाकेन्द्रों पर हर जगह बहनें ही हैं जो वहाँ की मुख्य संचालिका हैं और सारी सेवाएं, सारे कार्यभार खुद सम्भालती हैं। छोटे से लेकर बड़े कार्य खुद करती हैं। ये शक्ति कौन दे रहा है? सिर्फ और सिर्फ एक परमात्मा। वो आकर सिखाते हैं कि मैं पतियों का पति, पिताओं का पिता परमपिता शिव परमात्मा हूँ। मैं आप सबको वो सारी शक्तियाँ प्रदान कर सकता हूँ। सिर्फ और सिर्फ मेरे साथ अपना नाता जोड़ो। कहने का भाव यह है कि ब्रह्माकुमारीज़ सर्वोच्च महिला संस्थान के रूप में स्थापित एक मिसाल है पूरे विश्व के लिए। जहाँ कि चारो ओर महिलाओं को लोग घृणित नज़र से देखते हैं, वहीं यहाँ लोग इन बहनों के सामने नतमस्तक होते हैं। कारण सिर्फ एक है कि इनका अंदरूनी विकास हुआ, आध्यात्मिक विकास हुआ, चैतन्यता का विकास हुआ, सजगता का विकास हुआ, ना कि दैहिक और भौतिक विकास। वो तो दुनिया कर ही रही थी। लेकिन जब तक इस विकास को शामिल नहीं करते, तब तक विकास सम्पूर्ण नहीं माना जा सकता है। इसीलिए महिला उत्थान का सर्वोच्च संस्थान अगर कोई है, तो वो है ब्रह्माकुमारीज़। तो आइये...आप भी जुड़िए और जुड़कर देखिए कि सच में आपका विकास होता है या नहीं।

दिल्ली। भारत के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद को ज्ञानचर्चा के पश्चात् गुलदस्ता भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय,माउण्ट आबू। साथ हैं अमरजीत सिंह जनसेवक,पूर्व शिक्षा मंत्री,उ.प्र.।

भद्रक-ओडिशा। झारखण्ड की राज्यपाल महोदया द्रौपदी मुर्मू के साथ दीप प्रज्वलित कर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कमलेश दीदी, ब्र.कु. गीता तथा ब्रह्माकुमारी बहनें।

कानपुर-उ.प्र.। 'राजयोग द्वारा खुशनुमा एवं सफल जीवन' कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू। साथ हैं बायें से ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. दुलारी दीदी, पूर्व मंत्री अमर जीत सिंह तथा विधायक भगवती प्रसाद सागर।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्र.कु. लक्ष्मण भाई की प्रथम पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी शाश्वतनंद गिरी जी महाराज। साथ हैं ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. सरोज तथा अन्य।

लॉस एंजेलिस। नव वर्ष के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

रूरा-उ.प्र.। शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सत्येन्द्र। साथ हैं ब्र.कु. मोहम्मद कादिर, ब्र.कु. प्रीति, बी.जे.पी. वुमेन बोर्ड की चेयरपर्सन कल्पना सक्सेना तथा प्रिन्सीपल महानंद कुशवाहा।